488
104 P
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1285
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 488

9/1911

891.431
V59K

* बन्देमातरम् *

Give me Liberty or Give me Death.

क्रान्ति-गीताञ्जलि

"Woe unto the Nation in whose judgment seat a stranger sits."

De-Velera.

* * * *

"Excess of severity is not the path to order on the contrary it is the path to "Bomb".

Viscount Morley.

* * * *

कुछ आरज़ू नहीं है, है आरज़ू तो यह है,
रखदे कोई ज़रा सी ख़ाके वतन कफ़न में।

(शहीदे अशफ़ाक़)

प्रकाशक व सम्पादक-

हुलास वर्म्मा, "प्रेमी,,

भारतीय प्रेस देहरा दून

द्वितीयबार १०००] सम्वत् १९८६ [मूल्य =)

Printed at the Bhaskar Press Dehra Dun.

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
25 AUG. 1930

द्वितीय संस्करण की

* भूमिका *

मेरठ षडयन्त्र केस के अभियुक्त मिस्टर झाब वाला ने क्रान्ति की जो व्याख्या की है उसको पढ़ने के बाद मेरी राय में इस देश की दुखित और पूञ्जीपति-फिरंगियो के अन्यायों से पिडित भारतीय जनता के लिये "क्रान्ती" एक अति आवश्यक और शीघ्र आरम्भ करने योग्य आन्दोलन है और उसका श्री गणेश चौ० हुलासवर्म्मा जी की सम्पादित की हुई जैसी इन दिल हिलाने वाली कविताओं से ही हो सकता है। फांसी के तख्ते पर से कहा गया केवल एक शब्द हजारो व्याख्यानो से ज्यादा असर करने वाला होता है।

इस पुस्तक में फांसी के तख्ते पर कटकने वालों और काले पानी तथा जेल यात्रियों की कही हुई नज़में दर्ज हैं काग्रेस के पुवसर पहिला एडीशन पांच दिन में हाथों हाथ बिक गया इसी से आप इस पुस्तक की उपयागता का अनुभव कर सक्ते हैं।

महावीरत्यागी

प्रधान जिला काग्रेस कमेटी
देहरा दून।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 488
Date 11.12.71
GOVT. OF INDIA

❀ क्रान्ति-गीताञ्जलि ❀

मातृ-बन्दना।

वन्देमातरम् १

जलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम् शस्य श्यामलाम् मातरम्। वन्दे०
शुभ्र ज्योत्स्नां पुलकित यामिनीम्
फुल्ल-कुसमित-द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम् बरदाम् मातरम्। वन्दे०
त्रिशं कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले,
द्वि-त्रिश-कोटि भुजै-धृ तखर करवाले,
के वले मां तुमि अवले!
बहु बल धारिणीम् नमामि तारिणीम्,
रिपु-दल वारिणीम् मातरम्। वन्देमातरम्॥

वन्देमातरम् २

क़ौम के ख़ादिम की है, जागीर वन्देमातरम्
है वतन के वास्ते, अक्सीर वन्देमातरम्॥

ज़ालिमों को है उधर, बन्दूक़ पर अपनी ग़रूर।
है इधर हम बेकसों का, तीर वन्देमातरम्॥
क़त्ल की हमको न दें, धमकी हमारे सब्र से।
तेग़ पर हो जायगा, तहरीर वन्देमारम्॥
किस तरह भूलूं इसे मैं, जबकि क़िस्मत में मेरी॥
लिख चुका है राक़िमे, तहरीर वन्देमातरम्॥
फ़िक्र क्या जल्लाद ने गर, क़त्ल पर बांधी कमर।
रोक देगा दूर से, शमशीर वन्देमातरम्॥
ज़ुल्म से गर कर दिया, ख़ामोश मुझ को देखना।
बाल उट्ठेगी मेरी, तस्वीर बन्देमातरम्॥
सर ज़मीं इंगलैण्ड की, हिल जायगी दो रोज़ में।
गर दिखायेगी कभी, तासीर वन्देमातरम्॥
सन्तरी भी मुज़तरिब थे, जब कि हर झंकार पर।
बोलती थी जेल में, ज़ञ्जीर बन्देमातरम्॥

भक्त-कामना ३

जगदीश ! यह विनय है, जब प्राण तन से निकले।
प्रिय देश रटते रटते, यह प्राण तन से निकले॥
भारत वसुन्धरा पर, सुख शान्ति संयुता पर।
शुचि शस्य-श्यामला पर, यह प्राण तन से निकले॥
देशाभिमान धरते, जातीय गान करते।
निज देश व्याधि हरते, यह प्राण तन से निकले॥

भारत का चित्र पट हो, युग नेत्र के निकट हो।
श्री जानह्वी का तट हो, तब प्राण तन से निकले॥
उद्योग सत्य सुख हो, आलस्य हो न दुःख हो।
सबका प्रसन्न मुख हो, तब प्राण तन से निकले॥
देशोपकार करके, मन मातृ-भक्ति भरके।
जय जय स्वदेश रटते, यह प्राण तन से निकले॥

शहीद गर्जना ४

(ले०—काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ ग़ुलाम खाना।
आज़ाद होगा होगा, आता है वह ज़माना॥
खूं खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द ज़ुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झंडे पर जां निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है जेल लो दमन की प्यारो।
इक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना॥

सर फ़रोशी की तमन्ना ५

(ले० विस्मिल)

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है॥
रह रवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरिये मंज़िल में है॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
आजफिर मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ़ मिट जाने की हसरतअब दिले 'विस्मिल' में है॥

पुष्प—हृदय ६

चाह नहीं है सुर बाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं है प्यारी के गल पड़ूं हार में ललचाऊं॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर मैं डालाजाऊं।
चाह नहीं है देवों के सिर चढ़ूं भाग्य पर इतराऊं॥
मुझे तोड़ कर हे बनमाली
उस पथ में देना तू फेंक।
मातृ भूमि हित शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक॥

देशभक्त वीर की गर्जना ७

तेरी इस ज़ुल्म की हस्ती को ऐ ज़ालिम मिटादेंगे।
ज़ुबां से जो निकालेंगे वह हम करके दिखा देंगे॥
भड़क उट्ठेगी जब सीनए सोज़ां की दूद आतिश।
तो हम यक सर्द आह भरकर तुझे ज़ालिम जला देंगे॥
हमारे आह व नाले को तुम बे सूद मत समझो।
जो हम रोने पै आएंगें तो एक दरया वहा देंगे॥
हमारे सामने सख़्ती है क्या इन जेलख़ानों की।
वतन के वास्ते हम दारपर चढ़ कर दिखा देंगे॥
हमारी फ़ाके मस्ती कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी।
निशां तेरा मिटा देंगे तुझे जब बददुआ देंगे॥
हज़ारों देश भक्त अब क़ौमी परवाने हैं ज़िन्दा में।
हम उनके वास्ते सब माल ज़र अपना लुटा देंगे॥
कुछ इस में राज़ था मुद्दत से जो ख़ामोश बैठे थे।
हम अब करने पै आये हैं तो कुछ करके दिखा देंगे॥
अगर कुछ भेंट आज़ादी की देवी हमसे मांगेगी।
समझ कर हम ज़हे क़िस्मत सब अपने सर चढ़ा देंगे॥
नहीं मंज़ूर अब इज्ज़त हमें सर माये दारों की।
बना कर शाह कृति को सिंहासन पर बिठा देंगे॥

चिनगारियां ८

होना मत भय भीत मृत्यु से, कायरता है, दुख है।
हंस हंस चढ़ना वलि वेदी पर निर्भयता है, सुख है।
क्यों होते भय भीत मृत्यु से आत्मा अजर, अमर है।
वलि वेदी पर बढ़ो वीर ! 'जयमाल' तुम्हारे गल है।
'शिवा' 'प्रताप' समान 'देश' पर शीश प्रसून चढ़ादो।
स्वतन्त्रता के अमर शहीदों में निज नाम लिखादो।

प्राणों पर इतनी ममता और स्वतंत्रता का सौदा।
बिना तेल के दीप जलाने का यह कठिन मसौदा।
मोती बिखराते वीतेगी जलती जीवन घड़ियां।
विना चढ़ाये शीश नहीं टूटेंगी मां की कड़ियां।
दुनिया में जीने का सबसे सुन्दर मधुर तक़ाज़ा।
ऐ शहीद ! उठने दे अपना फूलों भरा जनाज़ा।

सफल जीवन ९

जननी जन्म भूमि वेदी पर जो सर्वस्व चढ़ाते हैं।
धन्य धन्य जीवन है उनका, वही जन्म फल पाते हैं॥
अत्याचार अनीति दबाते, दीन दुखी का हाथ बटाते।
स्वतंत्रता का श्रोत बहाते, मातृ भूमि की लाज बचाते।
जो बन्दी जाते हैं।
धन्य धन्य जीवन है उनका वही जन्म फल पाते हैं।
निर्वासन है चन्दन बनसा, कटि कोपीन बिचित्र वरुण सा,

है ज़ंजीर सुमन—बंधन सा, कारागृह है देव सदन सा,
वही स्वर्ग—सुख पाते हैं।
धन्य धन्य जीवन है उनका वही जन्म फल पाते हैं।

राष्ट्र पताका १०

यह राष्ट्र ध्वजा धन मेरा, जीवन बलिदान करेंगे।
झंडा है प्राण हमारा, प्राणों से बढ़ कर है प्यारा,
तन मन धन इस पै वारा, जीवन क़ुरबान करेंगे ॥१॥
शूली पर उछल चढ़ेंगे, बन्धन से नहीं डरेंगे,
सब कुछ सानन्द सहेंगे, पर झंडा नहीं तजेंगे ॥२॥
आओ झंडा फहरावें, शुचि राष्ट्र भाव दर्शावें,
सत्याग्रह समर दिखावें, पर हिंसा नहीं करेंगे ॥३॥

उच्च हिमालय की चोटी पर जाकर इसे उड़ायेंगे
विश्व-विजयनी राष्ट्रपताका का गौरव फहरायेंगे
सब से उंची रहे न इसको नीचे कभी झुकायेंगे
समराङ्गण में लाल लाड़िले लाखों बलि २ जायेंगे
गूंजे स्वर संसार-सिन्धु में स्वतंत्रता का नमोनमो
राष्ट्र-गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमोनमो

वीरोद्गार ११

मां, मैं जाऊं कारागार।
बलि हो जाऊं तेरे कारण, चलूं विषम कृपाण की धार॥
पहन हाथ में सुन्दर कड़ियां, गान तुम्हारा ही करते।
बनूं पथिक न्यायालय का, तव ध्यान हृदय में ही धरते॥
प्राण दण्ड की आज्ञा पाकर, चित्त प्रसन्न मय होजावे।
देशोन्मत्त नश्वर शरीर का सदुपयोग अब होजावे॥
जन्म दिया था जिस कारण से, कारण को फिर हल कर दूं।
सब कर लाज तुम्हारी माता! तेरे आगे सर धर दूं॥

राष्ट्रिय-झण्डा १२

प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला॥
वीरों को हरषाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा॥१॥
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लख कर बढ़े जोश क्षण क्षण में
कांपे शत्रु देख कर मन में, मिट जावे भय संकट सारा॥२॥
इस झंडे के नीचे निरभय, लें स्वराज यह अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा॥३॥
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि २ जाओ
एक साथ सब मिल कर गाओ प्यारा भारत देश हमारा॥४॥
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
विश्व मुग्ध करके दिखलाये तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥५॥

मन तरंग १३

मिटेंगें देश पर अपने यही दिल में समाई है।
करें आज़ाद भारत को यही एक धुन समाई है॥
नहीं है ज्ञात क्या उनको कि भारत वीर भूमी है॥
करे बरबाद हम उनको कि जिन से दुश्मनाई है॥
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यान में रखना।
मिटेंगे हम मिटा करके शपथ हमने यह खाई है॥
है क्या शै जेल और फांसी डराते हो हमें जिन से।
कटें आदर्श पर तिल तिल न वह भी दुःख दायी है॥
करो जुल्मो सितम बेशक मगर यह भूल मत जाना।
नहीं अपमान सह सकते जो भारत के शैदाई हैं

शहीदों का सन्देश १४

दिन खून का हमारे, प्यारो ! न भूल जाना।
ख़ुशियों में अपनी हम पर आंसू बहाते जाना॥
सैय्याद ने हमारे चुन चुन के फूल तोड़े।
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना॥
गोली को खाके सोये जलियान बाग़ में हम।
सूनी पड़ी क़ब्र पर दीया जलाते जाना॥
हिन्दू और मुसलिमों की, होती है आज होली।
बहते हमारे रंग में दामन भिगोते जाना॥
कुछ क़ैद में पड़े हैं हम क़ब्र में पड़े हैं।
दो बूंद आंसू इन पर 'प्रेमी' बहाते जाना॥

वीर जितेन्द्र की भावना १५

फ़ाक़े करेंगे भूख के सदमे उठायेंगे।
रोटी खराब जेल की हर्गिज़ न खायेंगे।
दारो रसन से डर के न बुज़दिल कहायेंगे।
मर जायेंगे क़दम को न पीछे हटायेंगे।
हम ज़ुल्म सहके ज़ुल्म की हस्ती मिटायेंगे।
ज़िन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे॥
बैलों की तरह घास की सब्ज़ी न खायेंगे।
कूटेंगे न हम मूंज न चक्की चलायेंगे॥
बन्दे बला में फंसके न गरदन झुकायेंगे।
मूछों पै ताव देंगे अकड़ भी दिखायेंगे॥
हम ज़ुल्म सहके ज़ुल्म की हस्ती मिटायेंगे।
ज़िन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे॥
नंगे रहेंगे धूप की सख्ती उठायेंगे।
लेकिन न तन पै ग़ैर के कपड़े सजायेंगे।
कुरबानियों का मुल्क को रस्ता दिखायेंगे।
मर मरके अपनी क़ौम को ज़िन्दा बनायेंगे।
हम ज़ुल्म सहके ज़ुल्म की हस्ती मिटायेंगे।
ज़िन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे॥

बलिदान आह्वान १५

मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे, सामांन रहे न ये साज़ रहे।

फ़क़त हिन्द मेरा आज़ाद रहे, माता के सर पर ताज रहे ॥
पेशानी में सोहे तिलक जिसकी, औ गोद में गान्धी विराजरहे।
न ये दाग़ बदन में सुफ़ेद रहे, न तो कोढ़ रहे न ये खाज रहे ॥
मेरे हिन्दु मुसल्मां एक रहें भाई भाई सा रस्मो रिवाज रहे।
मेरे वेद पुराण कुरान रहें, मेरी पूजा सन्ध्या नमाज़ रहे ॥
मेरी टूटी मण्डैया में राज रहे, कोइ ग़ैर न दस्तन्दाज़ रहे।
मेरी बीन के तार मिले हों सभी एक भीनीमधुर आवाज़ रहे ॥
ये किसान मेरे खुश हाल रहें पूरी हो फ़सल सुख साज़ रहे।
मेरे बच्चे वतन पै निसार रहें, मेरी मां बहिनों में लाज रहे ॥
मेरी गाय रहे मेरे बैल रहें, घर घर में भरा नित नाज रहे।
घी दूध की नदियां बहती रहें, हरसूआनन्द स्वराज्य रहे ॥
'शर्मा' की है चाह खुदा की क़सम, मेरे बाद वफ़ात ये याद रहे।
जाढ़े का कफ़न हो मुझपे पड़ा, 'वन्दे मातरम्' अल्फाज़ रहे ॥

अलीपुर बम केस के अभियुक्त १६

(श्री ओश्म् प्रकाश जी के कालेपानी जाते समय के उद्गार जिनको श्री रामप्रसाद बिस्मिल काल कोठड़ी केअन्दर गाया करते थे)

हैफ़ जिसपै कि हम तय्यार थे मरजाने को।
जीते जी हमसे छुडाया उसी काशाने ॥
आसमां क्या यही बाक़ी था ग़ज़ब ढाने को।
लाके गुर्वत में जो रक्खा हमें तड़फाने को ॥
क्या कोई और बहाना न था तरसाने को ॥१॥
फिर नगुलशन में हमें लायेगा सैय्याद कभी।

क्यों सुनेगा तू हमारी कोई फ़रयाद कभी ॥
याद आयेगा किसे यह दिलेनाशाद कभी ।
हम भी इस बाग़ में थे क़ैद से आज़ाद कभी ॥
अब तो काहे को मिलेगी यह हवा खाने को ॥२॥
दिल फ़िदा करते हैं क़ुर्बान जिगर करते हैं ।
पास जो कुछ है वह माता की नज़र करते हैं ॥
ख़ाने वीरान कहां देखिये घर करते हैं ।
ख़ुश रहो अहले वतन हमतो सफ़र करते हैं ॥
जाके आबाद करेंगे किसी वीराने को ॥३॥
देखिये कब यह असीराने मुसीबत छूटें ।
मादरे हिन्द के अब भाग खुले या फूटें ॥
देश सेवक सभी अब जेल में मूंजें कूटें ।
आप यां ऐश से दिन रात बहारें लूटें ॥
क्यों न तरजीह दें इस जीने पै मरजाने को ॥४॥
कोई माता की उमीदों पै न डाले पानी ।
ज़िन्दगी भर को हमें भेज के काले पानी ॥
मूंह में जल्लाद हुए जाते हैं छाले पानी ।
आबे खञ्जर का पिला करके दुआले पानी ॥
भर न क्यों जायें हम इस उम्र के पैमाने को ॥५॥
हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर ।
हमको भी पाला था मां बापने दुःख सह सहकर ॥
वक्ते रुख़सत उन्हें इतना भी न आये कहकर ।
गोद में आंसू कभी टपके जो रुख़ से बहकर ॥

तिफ़्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को ॥६॥
देश सेवा ही का बहता है लहू नस नस में ।
अब तो खा बैठे हैं चितौड़ के गढ़ की क़समें ॥
सर फ़रोशी की अदा होती हैं यों ही रस में ।
भाई ख़ंजर से गले मिलते हैं सब आपस में ॥
बहने तैयार चिताओं में हैं जल जाने को ॥७॥
नौजवानो जो तबीयत में तुम्हारी खटके ।
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके ॥
आप के अज्वे बदन होवें जुदा कट २ के ।
और सद चाक हो माता का कलेजा फटके ॥
पर न माथे पर शिकन आये क़सम खाने को ॥८॥
अपनी क़िस्मत में अज़ल से ही सितम रक्खा था ।
रंज रक्खा था महन रक्खा था ग़म रक्खा था ॥
किसको परवाह थी और किसमें यह दम रक्खा था ।
हमने जब वादिये ग़ुरबत में क़दम रक्खा था ॥
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को ॥९॥
अपना कुछ ग़म नहीं लेकिन यह ख्याल आता है ।
मादरे हिन्द पै कब तक यह ज़वाल आता है ॥
देश आज़ादी का कब हिन्द में ख्याल आता है ।
क़ौम अपनी पै तो रो रो के मलाल आता है ॥
मुन्तज़िर रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को ॥१०॥
मैकदा किसका है यह जामे सबू किसका है ।
वार किसका है मेरी ज़ां यह गलू किसका है ॥

जो बहे क़ौम की ख़ातिर वह लहू किसका है।
आसमां साफ़ बता दे तू अदू किसका है॥
क्यों नये रंग बदलता है तू तड़फाने को ॥११॥
दर्द मन्दों से मुसीबत की हलावत पूछो।
मरने वालों से ज़रा लुत्फ़ शहादत पूछो॥
चश्मे मुशताक़ से कुछ दीद की हसरत पूछो।
सोज़ कहते हैं किसे पूछो तो परवाने को ॥१२॥
बात तो जब है कि इस बात की ज़िद्दें ठानें।
देश के वास्ते क़ुर्बान करें सब जानें॥
लाख समझायें कोई एक न उसकी मानें।
कहता है ख़ून से मत अपना गरेवां सानें॥
नासहा आग लगे तेरे इस समझाने को ॥१३॥
न मयस्सर हुआ राहत में कभी मेल हमें।
जान पर खेल के भाया न कोई खेल हमें॥
एक दिन को भी न मंजूर हुइ बेल हमें।
याद आयेगा अलीपुर का बहुत जेल हमें॥
लोग तो भूल ही जायेंगे इस अफ़साने को ॥१४॥
अब तो हम डाल चुके अपने गले में झोली।
एक होती है फ़क़ीरों की हमेशा बोली॥
खून से फाग रचायेगी हमारी टोली।
जब से बङ्गाल में खेले हैं कन्हैया होली॥
कोई उस दिन से नहीं पूछता बरसाने को ॥१५॥
नौ जवानों यही मौक़ा है उठो खुल खेलो।

ख़िद्मते क़ौम में जो आये बला तुम झेलो ॥
देश के सद्क़े में माता को जवानी देलो ।
फिर मिलेगी न यह माता की दुआयें लेलो ॥
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को ॥१६॥

वीर-हृदय १७

देश की ख़ातिर मेरी दुनिया में गर तौक़ीर हो ।
हाथों में हों हथकड़ी पावों पड़ी ज़ंजीर हो ॥
आंखों की ख़ातिर तीर हो, मिलती गले शमशीर हो ।
इससे भी बढ़कर कोई दुनियां में गर तौक़ीर हो ॥
मर कर भी मेरी जान पर ज़हमत बिला ताख़ीर हो ।
मेरी ख़ातिर ख़ासकर दोज़ख नया तामीर हो ॥
सूली मिले फांसी मिले, फिर मौत दामन गीर हो ।
मंजूर हो, मंजूर हो, मंजूर हो, मंजूर हो ॥

असहयोग १८

तब्दील गवर्नमेंट की रफ़्तार न होगी ।
गर क़ौम असहयोग पर तैयार न होगी ॥
बन जायेंगे हर शहर में जलियान वाले बाग़ ।
इस मुल्क से गर दूर यह सर्कार न होगी ॥
ये जेलख़ाने टूट कर अब और बनेंगे ।
इसमें तमाम क़ौम गिरफ़्तार न होगी ॥

सौदाई हैं हम वतन के लोहे की बेड़ियां ।
सोने के ज़ेवरों में झंकार न होगी ॥
दुश्मन को असहयोग से हम जेर करेंगे ।
इन हाथों में बन्दूक़ या तल्वार न होगी ॥
कुछ मिलगये हैं ऐसे मुसल्मान व हिन्दू ।
बस अब तमीज़ तस्बीह व ज़िन्नार न होगी ॥
हम ऐसी हकूमत को मिटा देवेंगे बिल्कुल ।
ग़म में हमारे जो कभी ग़मख्वार न होगी ॥

स्वतन्त्रता-पूजन १६

अधीन होकर बुरा है जीना है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।
सुधाको तजकर ज़हर का प्याला है पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
पड़ीहों हाथों में हथकड़ी यदि तो स्वर्ग के सुख से लाभ क्या है ।
नरक के दुखमें निवास निशिदिन है करनाअच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
जो दास होकर मिलें भवन में सौ स्वादु भोजन तो तुच्छ हैं सब ।
सदैव उपवास करके बन में विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
मिलें उपाधि या मान पदवी जो सेवा करके तो व्यर्थ हैं सब ।
घृणा के गड्ढे में होके व्याकुल उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

अच्छे दिन आने वाले हैं २०

ऐ मादरे हिन्द न हो ग़मगींन अच्छे दिन आने वाले हैं ।
आज़ादी का पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं ॥

मा तुझको जिन जल्लादों ने, दी है तकलीफ जईफी में।
मायूस न हो मग़रूरों को, हम मज़ा चखाने वाले हैं॥
कमज़ोर हैं और मुफलिस हैं हम, गो कुञ्ज क़फस में बेबस हैं।
बेकस हैं लाख मगर माता, हम आफ़त के परकाले हैं॥
हिन्दु और मुस्लिम मिल करके, चाहे जो हम कर सकते हैं।
ऐ चर्खे कुहन हुशियार हो तू, पुरशोर हमारे नाले हैं॥
मेरी रूह को क़रना कैद क़तल, इमकान से बाहर है उनके।
आज़ाद है अपना दिल शैदा, गो लाख ज़ुबां पर ताले हैं॥
मग़लूब जो हैं होंगे ग़ालिब, महकूम जो हैं होंगे हाकिम।
सदा एकसा वक्त रहा किसका, कुदरतके तौर निराले हैं॥
गान्धी ने तर्क ताआउन का यह कैसा मंत्र चलाया है।
लरज़ां है जिससे अर्ज, समां, सरकार को जान के लाले॥

हिन्दियों को संदेश २१

न हिन्दियों बेक़रार हो तुम, कि नेक ऐय्याम आरहे हैं।
वह जल्द मिट जायेंगे जहां से, हमें जो ज़ालिम सता रहे हैं॥
न समझो रस्सी या बान उनको जो जेल में बट रहे हैं बंदी।
वह आहनी तौक़ पापियों के, गले की ख़ातिर बना रहे हैं॥
उधर से संगीने तन रही हैं, इधर से सीने खुले हुये हैं।
इधर है चेहरों पर मुसकराहट, उधर वह गोली चला रहे हैं॥
इधर इरादा यह कर चुके हैं, क़दम न पीछे हटायेंगे हम।
उधर वह लालच से धमकियों से, हमारे दिल आज़मा रहे हैं॥
खुदा को मंजूर अब यही है, कि हिन्द में इनक़लाब होगा।

तब ही तो भारत के लाल खुश होके, जेलख़ाने को जा रहे हैं ॥
थी जिनके क़दमो पै सारी दुनिया, की न्यामते दस्त बस्ता हाज़िर।
खुदा की क़ुदरत वह आज हंस हंसके खुश्क रोटी चबा रहे हैं ॥
अब वक़्ते स्वराज आ रहा है और लार्ड अरविन भी कह रहा है।
मगर "मुसाफ़िर" को धोका देकर के, और मुद्दत बता रहे हैं ॥

नौजवानो की तमन्ना २२

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते।
नाम ज़िन्दो में लिखा जायेंगे मरते मरते ॥
हमको कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुश्मन।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते ॥
ज़ुल्म करती है बहुत हिन्द पर नौकर शाही।
उसकी बद्चाल मिटा जायेंगे मरते मरते ॥
दिलों पर दुश्मानों के अपनी जवांमर्दी से।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते ॥
जेलख़ाने की भी खुश होके बढ़ायें रौनक़।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते ॥
मातृ भूमि के लिये जान निछावर कर दें।
सबक़ भारत को पढ़ा जायेंगे मरते मरते ॥
है तो ना चीज़ मगर इतनी जुरअत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते ॥
भगत सिंह, दत्त, दयानन्द, तिलक, गान्धी का।
सब को फरमान सुना जायेंगे मरते मरते ॥

शहीदों के खूं का असर २३

शहीदों के खूं का असर देख लेना ।
मिटायेंगे ज़ालिम का घर देख लेना ॥
किसी के इशारे के हम मुन्तज़िर हैं ।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना ॥
झुका देंगे गरदन को हम जेर खंजर ।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ॥
जो खुद ग़र्ज गोली चलाते हैं हम पर ।
तो क़दमों में उनका ही सर देख लेना ॥
जो नख्ल हमने सींचा है खूंने जिगर से ।
वह होगा कभी बार वर देख लेना ॥
किनारे पर आये भंवर से वह क़िश्ती ।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना ॥
बलायें यह जायेंगी खुद सर नगूँ हों ।
नहीं होगी इनकी गुज़र देख लेना ॥
खुजन्दी हुआ हिन्द आज़द अपना ।
छपेगी यह यक दिन ख़बर देख लेना ॥

आवाहन २४

कसली है कमर अबतो कुछ करके दिखादेंगे ।
आज़ाद ही होलेगें या सर ही कटा देगें ॥
हटने के नहीं पीछे डरके कभी ज़ुल्मो से ।
तुम हाथ उठावोगे, हम पैर बढ़ा देगें ॥

वेशस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चर्खे का।
चर्खे से जमीं का हम तो चर्ख गुञ्जां देगे॥
परवाह नहीं कुछ दम की, गम की नहीं मातम की।
है जान हथेली पर यक पल में गवां देगें॥
उफ तक भी जुवां से हम हरगिज़ न निकालेगें।
तलवार उठावो तुम हम सर को झुकादेगें॥
सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका।
चलवाओगनमशीनें हम सीना अड़ा देगें॥
दिल वादो हमें फांसी एलान दे कहते हैं।
खूं से ही शहीदों के हम फौज़ बना देगें॥
"मुसाफिर" जो अन्डमन के तूने बनाये ज़ालिम।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुलालेंगें॥

फरयाद बुलबुल २५

आबाद है जिस दिन से सैयाद चमन में।
बुल तो कहां गुल भी है बरबाद चमन में॥
हर वक्त लगी रहती हैं सैयाद की आंखे।
बुल बुल जो फिरा करती हैं अज़ाद चमन में॥
गुल हाय शगुफ्ता ने अजब शान निकाली।
होने को है बुलबुल कोई बर्बाद चमन में॥
सैयाद उफाज़ू है तो जल्लाद है गुलचीं॥
सुनता नहीं है कोई भी, फरयाद चमन में।
नाशाद उसी दिन से है आग़ाज खिजां का।
जिस दिन से मकीं है सितम ईजाद चमन में।

उम्मीद की झलक २६

अरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्तां होगा ।
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशतां होगा ॥
चखायेंगे मज़ा बरबादिये गुलशन का गुलची को ।
बहार आजायेगी उस दिन जब अपना बागवां होगा ॥
वतन की आबरु का पास देखे कौन करता है ।
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तिहां होगा ॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज़ ।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहां और तू कहां होगा ॥
यह आये दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ खञ्जरे क़ातिल ।
बता कब फैसला उन के हमारे दर्मियां होगा ॥
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर वर्ष मेले ।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशा होगा ॥
कभी वह दिन भी आयेगा कि जब स्वराज देखेंगे ।
जब अपनी ही ज़मी होगी जब अपना आसमा होगा ॥

वीर गर्जना २७

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना ।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना ।
मत बुजदिली को हरगिज़ तुम पास दो फटकने ।
आख़िर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ।
स्वातन्त्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर वजों का तुमको गर नाम है चलाना ।

परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना।
दृढ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा।
आकर के जोश में तुम हुल्लड नहीं मचाना।
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित।
वालंटियर बनो तुम अब छोड दो बहाना।
दिल में झिझक न लाओ आगे क़दम बढ़ाओ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खाना।
"सरजू" समय यही है कुछ करलो देश सेवा।
दो दिन की जिन्दगी है इसका नहीं ठिकाना॥

तरानये फ़लक २८

बाग़ से सर सर का झोंका, आशियाना ले गया।
अन्दलीबों को क़फ़स में, आबोदाना ले गया॥
कुछ गुले गुल्चीं का शिकवा, बुल बुले भारत न कर।
तुझको पिञ्जरे में है तेरा, चह चहाना ले गया॥
कौन कहता है ज़बर्दस्ती, से हम पकडे गये।
जेल में ख़ुद हमको शौके, जेलख़ाना ले गया॥
क्यों घटा अदबार की छाये, न अहले हिन्द पर।
खींच कर यूरोप है सब, मालो ख़ज़ाना लेगया॥

स्वदेश-प्रेम २६

सेवा में तेरी भारत ! तन मन लगायेंगे हम।
फिर स्वर्ग का सहोदर, तुझ को बनायेंगे हम॥

तुझ से जिये तुझी ने, पालन किया हमारा।
उपकार जितना करता, क्या क्या गिनायेंगे हम॥
तेरे ऋणों का बोझा, सर पर धरा हमारे।
करके प्रयत्न पूरा, उसको चुकायेंगे हम॥
तेरे लिये जियेंगे, तेरे लिये मरेंगे।
आख़िर स्वतन्त्र करके तुझको दिखायेंगे हम॥

कर्म्म—युग ३०

आगया है कर्म्म-युग, कुछ कर्म्म करना सीखलो।
देश पर अरु जाति पर, हंस हंस के मरना सीख लो॥
मारने का नाम मत लो, ख़ुद आप मरना सीखलो।
मिस्ले आयर्लैंड दव कर, फिर उभरना सीखलो॥
पार यदि होना तुम्हें, परतन्त्रता दुःख सिन्धु से।
तैर कर के रक्त-सागर, से उतरना सीखलो॥
तीर्थ यात्रा के लिये, दिन रात उत्साहित रहो।
कृष्ण जन्म-स्थान में, निर्भय विचरना सीखलो॥
देखना है दृश्य, भारतवर्ष में यदि स्वर्ग का।
देश का तो प्राण पण से, दुःख हरना सीखलो॥

गाना ३१

यह आरज़ू है मेरी भारत पे वार करदूं।
तन मन जिगर कलेजा सब कुछ निसार करदूं॥
ऐसी हवा चलाऊं जायें यह दिन ख़िज़ां के।
भारत के गुलसितां में मौसम बहार करदूं॥

ईश्वर दे मुझको हिम्मत साहस दे हौसला दे ।
भारत की उन्नति की नावों को पार करदूं ॥
यह आरती गुलामी की क़ौम के बदन पर ।
पहनी जो मुद्दतों से ये तार तार करदूं ॥
ऐसी करूं तपस्या स्वराज्य लेकर छोड़ूं ।
मिट जाए बेक़रारी दूर इन्तज़ार करदूं ॥

शहीदों के लाशे के प्रति ३२

भाईयो नहीं है लाशा यह बे कफन तुम्हारा ।
है पूजने के लायक पावन बदन तुम्हारा ॥
दिन आज का यह होगा त्यौहार एक कौमी ।
बैकुण्ठ को हुआ है इस दिन गमन तुम्हारा ॥
ज़ाया लहु तुम्हारा जाने का यह नहीं है ।
फूले फलेगा इससे देशी चमन तुम्हारा ॥
ख़ुद मरके जिस्म कौमी में तुमने जान डाली ।
जाति का है यह जीवन गोया मरण तुम्हारा ॥
सब भक्तियों से बढ़कर उत्तम है देश भक्ति ।
छूटा है बाद मुद्दत आवागमन तुम्हारा ॥
इतिहास में रहेंगी कुर्बानियां तुम्हारी ।
तुम पर फ़ख्र करेगा प्यारा वतन तुम्हारा ॥

बलिदान ३३

चाहती हैं माता बलिदान, जवानों उठो हिन्दुस्तान ॥
चाहती है माता०

हंसते हुये फूल से आकर, शीश झुका दो मां के पग पर।
कटता हो कट जाने दो सर, तनिक न हो हैरान ॥
जवानों उठो०
सोने वालों ! उठो कड़क कर, जागे हुये बढ़ो वेदी पर।
बूढ़ा हो नारी हो या नर, सबको है आह्वान ॥
जवानों उठो०
हो चमार भङ्गी या पासी, विप्र पुजारी या सन्यासी।
धनी दरिद्री हो उपवासी, सबका भाग समान ॥
जवानों उठो०
उठो अपढ़ मूरख विद्वानों, हिन्दु मुस्लिम औ क्रिस्तानों।
जन, पारसी, सिक्ख, महानों, प्यारी मां के प्रान ॥
जवानों उठो०
ओ छात्रों ! भावी अधिकारी, उठो २ निद्रित व्यापारी।
उठो मजूरों दीन भिखारी, दुखी दरिद्र किसान ॥
जवानों उठो०
हो गुलाम कैसा ही दागी, वर्तमान शासन अनुरागी।
नरम गरम वैरागी त्यागी, उठो सभी मतिमान ॥
जवानों उठो०
स्वार्थ और मतभेद मिटाओ, बैर फूट को दूर भगाओ।
फ़हराओ तुम आज हिन्द में, इक जातीय निशान ॥
जवानों उठो०
फांसी चढ़ो जेल में जाओ, भयवस कभी न देश भुलाओ।
हथकड़ियों पर मिल कर गाओ, स्वतन्त्रता का गान ॥
जवानों उठो०

पूरन करो यज्ञ माता का, ज्यो प्रताप अभिमानी बांका।
ज्यों शिव सूर्य हिन्द गुरुता का, जैसे तिलक महान॥
जवानों उठो०
मीठी गमन झंकार सुखारी गान्धी वीणा की अतिप्यारी।
"माधव" मस्त उठा दिखलादो, कालों में है जान॥
जवानों उठो०

उतना ही वह उभरेंगे जितना कि दबा देंगे ३४

ज़िंदा हैं अगर ज़िन्दा, दुनिया को हिला देंगे।
मशरक़ का सिरालेकर, मग़रव से मिला देंगे॥
हम सीनये हसती में, अंगारा है अंगारा।
शौले भड़क उट्ठेंगे, झोंके जो हवा देंगे॥
मज़दूर हों दहकां हों, हिन्दु हों मुसलमां हों।
सब एक तो हो जाओ, फिर उनको दिखा देंगे॥
हम कौन हैं हम क्या हैं, हम कुछ भी नहो लेकिन।
वक्त आने दो वक्त आने, फिर उनको दिखा देंगे॥
मज़दूर की फ़ितरत में, कुदरत ने लचक दी है।
उतना ही वह उभरेगा, जितना कि दबा देंगे॥
मज़दूर के नालों से, आतिश भड़क उट्ठेगी।
चलते हुए पानी में हम आग लगा देंगे॥
तारी किये ग़फलत में, हैं जो कि पड़े सोते।
यह नज्म "सूफ़ी" पढ़ कर, हम उनको जगा देंगे॥

बोल्शेविक षड्‌यन्त्र मेरठ के अभियुक्तों का गान ३५

क्या ख़ाक है तेरी ज़िन्दगानी,
उठ ग़रीब बे नवा।
क्या है यहतूने दिल में ठानी,
रहे बन्दा गुलाम अबदा।
आ हम गुलामी अपनी छोड़ें
हों आज़ाद और रिहा।
बदले यह सारी दुनियां बदले,
जिसमें जुल्म है ज़ोरो जफ़ा।
है यह जंग हमारी आख़री,
इस पर है फैसला।

गीत ३६

सारे जहां के मजलूमों, उट्ठो कि वक्त आया।
ऐ पेट के गुलामों उट्ठो कि वक्त आया,
दुनियां के बद नसीबों उट्ठो कि वक्त आया।
रस्मो रिवाज सारे तोड़ो जहां के जितने,
उट्ठो गुलामी अपनी छोड़ो पैगामनोह आया।
इन्साफ गर्जता है छोड़ेंगे लेकर बदला,
दुनियां नई बसेगी सुनलो है यह सुनाया।
फिर होरहा है मेला अब से नया जमाना,
सब कुछ उन्हीं का होगा अब तक रहे जो साया।
उट्ठो गरीब भाइयां अब कमर बांध निकालो,

जंग आखरी लड़ो तुम फरमान यह है आया।
जुल्मो सितम हैं जितने उनको मिटा के एक दम
आराम से रहो तुम यह गीत हमने गाया।

हो गये हैं अपने घर में हमबे खानमां ३७

हम नशीं बतलाये क्या हम दर्दे दिल की दास्तां।
एक मुद्दत से हैं जोरे-चर्ख से नालांकुनां॥
तिनके तिनके ले गया सैय्याद चुन कर अपने घर।
और पत्तो को उड़ा कर ले गई वादे-खिज़ां॥
साकिनाने गुलशने हस्ती मुकामे गौर है।
हो गये हैं अपने घर में हैफ़ हम बेखानमां॥
हम असीरो ? रिहाइ की भी अब तदबीर हो।
हैं हमारी बेकसी पर खनदाजन अहले--जहां॥
बया करें हम रोनके बागे जहां को क्या करें।
अपना ही गुलजार है जब वरुफता-रोजे खिज़ा॥
नोजवानाने वतन हिम्मत जरा दरकार है।
फिर बसाना है हमें उजड़ा हुआ यह आशियां॥

नौ जवानो को चेतावनी ३८

हिम्मत करो जवानो आजादे वतन हो,
उफ आपके होते हुए बर्बाद वतन हो॥
अफ़सोस अहले दर्द में उल्फत की बू न हो,
नफ़रत का दौर दौरा हो नाशादे वतन हो॥
कोठी भरे हैं माल से बाजार पेट है,

पर क्या मजाल एक भी आज़ादे वतन हो ॥
गान्धी के असूलों पर हो खद्दर की अशाअत,
इफलास मिटे कौम की इमदादे वतन हो ॥
दुश्मन की क्या मजाल जरा आंख उठा सके,
तुम भीम बनो और यह फौलाद वतन हो ॥
जितेन्द्र शहीदे कौम की मरकद की सदा है,
तुम कौम की तामीर मे बुनियाद वतन हो ॥
गुलचीं के दस्ते बुर्द से वर बादे चमन हो,
खूने जिगर से सीचलो आबादे वतन हो ॥
बुल बुल की तरह गुल की मुहब्बत में जान दो,
यकबिर्दे जुवां देश हो फर्यादे वतन हो ॥
अहले नजर के वास्ते गर शीरीं वतन हो,
हर फर्द वतन क़ौम का फरहादे वतन हो ॥

जितेन्द्र दास–गीत ३६

क्या लिखें आजाद होकर हम कहानी "दास" की।
दिल अगर हो तो सुनो दिल से कहानी "दास" की ॥
फ़ाके मस्ती में भी मस्तों की तरह वो मस्त था।
जेल में ही कट गई सारी जवानी दास की ॥
शौक से दुनियां के लोगों को यही कहना पड़ा।
देश सेवा के लिये भी जिन्दगानी दास की ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 488
Date 11.12.71
GOVT. OF INDIA

मौत से मत डरो ४०

बुज़दिलों ही को सदा मौत से डरते देखा,
गो कि सौ बार उन्हें रोज़ ही मरते देखा।

मौत से वीर को हमने नहीं डरते देखा,
तख्तए मौत पे भी खेल ही करते ही देखा।

मौत इक बार जब आना है तो डरना क्या है,
हम सदा खेल ही समझा किये, मरना क्या है।

वतन हमेशा रहे शाद काम और आज़ाद,
हमारा क्या है, अगर हम रहें, रहें, न रहें॥

एक निर्वासित का विलाप ४१

परदेश में हैं हम दूर वतन, ऐ चर्ख़ मुझे बरबाद न कर।
कुछ हद भी है रंज मुसीबत की-तू हम पै सितम ज़ल्लाद न कर॥

आये हैं वतन को छोड़ के हम घर बार के छुटने का दिल पै है गम।
मारे हुये तग़दीर के हम तू हम पै सितम बेदाद न कर॥

हम हिन्द के रहने वाले हैं, कुछ-मुह-से न कहने वाले हैं।
दुख़ दर्द के सहने वाले हैं, तू हम पै सितम इजाद न कर॥

ऐ "शमश" मुकद्दर सोता है, रोने से भला क्या होता है।
क्यों हिन्द का नाम डुबोता है पर देश में तू फ़रीयाद न कर॥

झगडा नहीं झुकेगा झगडा नहीं झुकेगा ४२

भारत के लाल ने जब ऊपर इसे उठाया।
आज़ादिका संदेशा कुल मुल्क को सुनाया॥
जय जय का शोर इसके चारो तरफ़ से आया।
हर एक बाहया के दिल में यही समाया॥
झण्डा नही०
अपनी स्वतंत्रता पर सर्वस्य वार देंगे।
घटने न देश का हम अपने विकार देंगे॥
कौमी निशान पर हम होने न वार देंगे।
दुशमन को देखते ही बस यह पुकार देंगे॥
झण्डा नही०
कुर्बान तन है इसपर इसपर निसार मन है।
समझे हुये इसी को हम अपना धर्म धन है॥
साये में इसके हाज़िर सब अपने हम वतन हैं।
हिन्दू है या मुसलमां सिख है कि क्रिश्चियन है॥
झण्डा नही०
गद्दार भाग जायें वह अब न मूह दिखायें।
इज्ज़त गवां रहे हैं तो अपनी वह गवांये॥
परवाह नही जरा भी आयें बलायें आयें।
जितने उठा सके वह कितने यहां उठयें॥
झण्डा नही०
साये में इसके हम सब एक जान हो चुके हैं।
आज़ादी के हमारी सामान हो चुके हैं॥

इसके हज़ार हम पर अहसान हो चुके हैं।
लाखों जवान इस पर कुर्बान हो चुके हैं॥
झण्डा नही०
स्वाधीनता पताका आज़ादी का अलम है।
प्राणों पै आ बनेगी किसको यहां यह ग़म है॥
दम ख़म है किसमे ऐसा कर सकता कौन ख़म है।
जबतक कि जांमे जां है जबतक कि दम में दम है॥
झण्डा नही०
छोड़ा है मौत का डर तो किससे अब डरेंगे।
आगे बढ़े है अब क्या पीछे कदम धरेंगे॥
सीने पै जख़्म खा कर हरगिज न उफ़ करेंगे।
झूझे भी तो यही हम कहते हुये मरेंगे॥
झण्डा नही०

इतिशुभम्ः

CONFESSION OF

Nalivaika.

I know destruction awaits
Him, who first rises
Against the oppressor's yoke.
My fate is sealed and closed
But tell me, where and when
Without victims, was ever Freedom won?
For my native land I Perish,
I feel it, and I know it;
And in my heart, Oh ! holy father,
My fatal star I bless,

Ryleiff.

अर्थात " मैं जानता हूं, कि अत्याचारी के जूए के विरुद्ध जो सबसे पहिले सर उठाना है नाश उसकी प्रतीक्षा करता है। मेरे भाग्य पर मुहर लगादी गई, और वह अवरुद्ध कर दिया गया है, पर मुझे बताओ किकहां और कब बिना आत्म बलिदान के स्वतन्त्रता प्राप्त की गई है ? मैं यह अनुभव करते हुये अच्छी तर हजानताहूं कि मैं अपनी मातृभूमि के लिये मिट रहा हूं। हे परमपिता ! मैं अपने अन्तरतल में इस मरणात्मक नक्षत्र को आशीष देता हूं।"

My challenge to the British nation is-Will you settle it with pen or sword, with ink or blood ?

India has no arms, but if she has to fight with her back to the wall, she can make swords out of her bones, and she will have her freedom. *Sarojini Naidu*

I offer neither pay, nor quarter, nor provisions; I offer hunger, thirst, forced-marches, battles and death. Let him who loves his country in his heart, not with his lips, only follow me. *Garibaldi*

So many Jatins are pining away in the jails and so many Lajpats are beaten to death. When Mahendrapratapts are exiled and Bhagats and Dutts are transported what are we youngmen for ?

Should we sit idle ?

* **Be Aggressive.**

AND

Shake to Earth your chains like dew
Which in sleep have fallen on you

Somen Mookerjee

स्थानीय एजंट:-

ला० सीताराम मंसूरी निवासी

कांग्रेस स्वयम् सेवक (देहरादून)

मिलने का पता:—

भारतीय पुस्तकालय, देहरादून।